अक्टूबर-दिसम्बर 2023
से
जनवरी-मार्च 2024

ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

UGC Care Listed

मूल्य : ₹100

स्त्री कविता की ज़मीन और कविता का वर्तमान

125 स्त्री कवियों की कविताई पर सात खंडों में सामग्री

अतिथि संपादक

शशिभूषण मिश्र

प्रधान संपादक*
विजय राय

संपादक*
ऋत्विक राय

संयुक्त संपादक*
ऋतिका
वत्सल कक्कड़

इस अंक के अतिथि संपादक*
शशिभूषण मिश्र

आवरण और साज-सज्जा
स्वपन कम्युनिकेशन, गाज़ियाबाद (उ.प्र.)
swapancommunication@gmail.com

रेखांकन : अनुप्रिया, शशिभूषण बडोनी

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय संपर्क
3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ-226010 उत्तर प्रदेश
ईमेल : vijairai.lamahi @gmail.com
मो० 9454501011

इस अंक का मूल्य : 100/-रुपये मात्र

लमही का वेब अंक आप
www.notnul.com पर पढ़ सकते हैं।

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे त्रैमासिक पत्रिका 'लमही' और उसके संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

लमही की स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मंजरी राय के लिए श्रीमंत शिवम् आर्ट्स, 211 पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा 3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 से प्रकाशित।

***सभी अवैतनिक**

लमही

वर्ष: 16, अंक: 2-3, अक्टूबर-दिसम्बर 2023 से जनवरी-मार्च 2024

UGC Care Listed

लमही

वर्ष: 16, अंक: 2-3, अक्टूबर-दिसम्बर 2023
से जनवरी-मार्च 2024

इस अंक में

स्त्री कविता की ज़मीन और कविता का वर्तमान

स्मृति का उजास

1. स्नेहमयी चौधरी : **अपने ख़िलाफ़ चौतरफा लड़ाई** — सुधा उपाध्याय — 13
2. निर्मला ठाकुर : **स्मृतियों में बसा एक कवितामय जीवन** — सुधीर सिंह — 18
3. अर्चना वर्मा : **बहुत कुछ कहा जाना और सुना जाना है** — सोनाली मिश्र — 21
4. रजनी तिलक : **दलित स्त्री आंदोलन का विद्रोही स्वर** — पूनम तुषामड़ — 24
5. रश्मि रेखा : **समय से संवाद की कवयित्री** — चित्तरंजन कुमार — 27

समकालीनता की बीजभूमि

1. शुभा : **हम जो कर रहे, वह नृत्य ही तो है** — आरती — 33
2. निर्मला गर्ग : **कविता की शक्ल में जीने की शर्त** — सिद्धार्थ शंकर राय — 37
3. तेजी ग्रोवर : **यह पीला उम्र में बड़ा है** — अमिता — 41
4. गगन गिल : **कोई बतलाए कि हम बतलाएं क्या** — विपिन चौधरी — 46
5. कात्यायनी : **प्रतिरोध और साहस का स्वर** — प्रीति चौधरी — 50
6. अनामिका : **स्त्री कविता का एक अपरिहार्य नाम** — ऋत्विक भारतीय — 54
7. अजंता देव : **स्त्री कविता का अलहदा स्वर** — सोनी पाण्डेय — 60
8. अनीता वर्मा : **कविता की जीवन-संवेदना और सरोकार** — कुमारी उर्वशी — 63
9. सुमन केशरी : **स्त्री-अभिव्यक्ति का संघर्ष** — आनंद पांडेय — 67

समकालीनता की नयी भूमि

1. सविता सिंह : **स्त्री स्वर का अपनापन** — संदेश नायक — 73
2. पूनम सिंह : **कविता के प्रति आस्था** — कमलेश वर्मा — 77
3. सविता भार्गव : **सृजन का धैर्य** — निशि उपाध्याय — 81
4. नीलेश रघुवंशी : **कविता निर्बलतम का पक्ष है** — कीर्ति जैन — 84

5. शोभा सिंह : **असहमति और प्रतिरोध का स्वर** मुकुल सरल 88
6. वंदना टेटे : **श्रम का सौंदर्य और स्त्री मन की आवाज़** नीलाभ कुमार 91
7. निर्मला तोदी : **बचेगा वही, जो रचेगा** निशान्त 95
8. प्रज्ञा रावत : **कविता में निहत्थी ईमानदारी की मिसाल** अरविंद त्रिपाठी 99
9. रंजना जायसवाल : **रंग बिरंगी स्मृतियों का कोलाज** अंजली मिश्रा 108
10. उषा राय : **विद्रूपताओं से मुठभेड़ लेता प्रतिरोधी स्वर** राघवेन्द्र मिश्र 112
11. डॉ. शांति सुमन : **संवेदना की सान्द्र भावभूमि** मधु शुक्ला 116
12. इंदु श्रीवास्तव : **ये ग़ज़ल का लहज़ा नया-नया** ओम निश्चल 119

नयी सदी की कविता

1. लीना मल्होत्रा : **वेदना के विष से स्वयं का उपचार** प्रियदर्शन 125
2. निर्मला पुतुल : **स्त्री अस्मिता और आदिवासी प्रश्न** किरण तिवारी 129
3. वाज़दा ख़ान : **समय सापेक्ष कविताएँ** प्रांजल धर 133
4. अनुराधा सिंह : **सहज की अपराजिता कवयित्री** साहिल कैरो 137
5. वन्दना मिश्रा : **कविता की स्त्री मनोभूमिका** गुरुमान सैनी 142
6. रीता दास राम : **कविता का संघर्षशील तेवर** शोभना चौधरी 145
7. पारुल पुखराज : **निःस्पृह मौन की बिम्बधर्मी कविताएँ** गौरव तिवारी 148
8. सुधा उपाध्याय : **कविता कभी गूँगी नहीं होती** नीरज कुमार द्विवेदी 151
9. आरती : **स्त्री-प्रतिबद्ध कविताओं का आईना** हेमराज कौशिक 155
10. निवेदिता झा : **मुक्ति के स्वप्न की राही** सुशांत कुमार 160
11. मालिनी गौतम : **स्त्री कविता में मानवीय मुक्ति का स्वर** मीना बुद्धिराजा 164
12. रुचि भल्ला : **स्मृति और समय के बीच झांकता विमर्श** अनिता 167
13. मनीषा झा : **संवेदना का भरा पूरा संसार** शशि शर्मा 170
14. विश्वासी एक्का : **अपनी ज़मीन और आसमान तलाशती कविताएँ** सेवाराम त्रिपाठी 174
15. ज्योति चावला : **चट्टान पर खड़ा प्रतिरोध** सविता पाठक 179
16. रश्मि शर्मा : **जीवन के इंद्रधनुषीय रंगों से बनी कविता** कुमारी उर्वशी 183
17. मृदुला सिंह : **स्त्री स्वप्नों को कापीराइट होने से बचाती कविताएँ** पीयूष कुमार 187
18. प्रतिभा गोटीवाले : **अँधेरे की शिनाख्त करती कविताएँ** सुनीता कुमारी 192
19. सोनी पाण्डेय : **लोक अस्मिता में स्त्री पक्षधरता का प्रस्थान** आरसी चौहान 195
20. पंखुरी सिन्हा : **तर्कशीलता और पारदर्शिता की कवयित्री** चित्तरंजन कुमार 198
21. बाबुषा कोहली : **जिनके लिए 'हरा' सिर्फ़ रंग नहीं 'राह' है** अंबरीश त्रिपाठी 202
22. प्रतिभा कटियार : **खुद को उकेरते हुए** सचिन मिश्र 206
23. पूनम तुषामड़ : **शोषण और विषमता के प्रतिपक्ष से उपजी कविता** आलोक कुमार मिश्रा 210
24. सीमा आज़ाद : **मेरी कविता के ताप से तुम्हारा लोहे सा बदन पिघलता है** सुमित कुमार चौधरी 213
25. विपिन चौधरी : **बिखर रही दुनिया में साबुत बची कवयित्री** देवेश 216

26. संध्या नवोदिता : **आत्म-शोधन से आत्म-विस्तार तक** — स्नेहा सिंह 219
27. इंदु सिंह : **विराट अर्थों के वैभव से लबरेज़ कविताएँ** — प्रांजल धर 222
28. मोनिका कुमार : **स्त्री-मन की अनकही इबारतें** — शुभम मोंगा 225
29. ज्योति शोभा : **जैसे टूटी हुई चीजों से बना है मन** — वसु गंधर्व 229
30. सुजाता : **प्रतिरोध का विस्तार रचती कविताएँ** — चन्दन कुमार 232
31. सुलोचना वर्मा : **अब जबकि समय बह गया है पानी की तरह** — ज्योतिष जोशी 235
32. रेखा चमोली : **उम्मीद दिए सी टिमटिमाती है** — विपिन कुमार शर्मा 239
33. पल्लवी त्रिवेदी : **प्रेम एक उत्सव है, विदा एक प्रथा** — नेहल शाह 242
34. पूनम वासम : **बस्तर जिला चो आदिवासी पिला** — पीयूष कुमार 245
35. विशाखा मुलमुले : **वक्ष पर झूलती वैजयंती की धुन वाली कविताएँ** — शहंशाह आलम 250
36. सुशीला पुरी : **स्त्री मुक्ति की परिधि से बाहर हस्तक्षेप करती कविताएँ** — मेरी हांसदा 253
37. श्रुति कुशवाह : **अंधेरे समय में सोने से रोकती कविता** — शान्ति नायर 257
38. सीमा संगसार : **क्या फ़र्क पड़ता है हमारी ज़िंदगी से** — के एम प्रतिभा 260
39. प्रज्ञा सिंह : **कविता का समय बनाम समय की कविता** — श्रेयसी सिंह 264
40. रंजीता **: प्रेम ही दुनिया को बचाएगा** — शहंशाह आलम 267
41. किरण मिश्र : **परम तत्व की तलाश और जिज्ञासा से अनुप्राणित कविताएँ** — अनिल अनलहातु 269

नयी सदी नए प्रस्थान

1. जसिन्ता केरकेट्टा : **कविताएँ जो ज़मीन माँगती हैं** — राही डूमरचीर 275
2. शैलजा पाठक : **जो जल रहा है, दिल है, जो बुझ रहा, वो ख़्वाब है...** — अल्पना सिंह 280
3. रूपम मिश्र : **पीड़ा नदी का घाट** — जीवन सिंह 284
4. रश्मि भारद्वाज : **कहने दीजिए कविता को जैसा है जीवन** — अरुण होता 288
5. सपना भट्ट : **अहर्निश दुख सहना बड़ी चीज है** — अखिल मिश्र 292
6. जोशना बैनर्जी आडवानी : **संगीत और दर्शन की कलावंत अभिव्यक्ति** — प्रिया वर्मा 295
7. अनामिका अनु : **कविता का नाभिक है प्रेम और प्रेम का नाभिक है स्वतंत्रता** — त्रिभुवन 299
8. पूनम अरोड़ा : **स्त्री-अंतर्मन की सूक्ष्म कोमलता और यंत्रणादायक बाह्य संसार** — योगेश प्रताप शेखर 303
9. नताशा : **घृणा से नकार और प्रेम में आस्था की कवि** — अंचित 306
10. प्रिया वर्मा : **कहीं भी खत्म नहीं होती कविता** — विजय कुमार 309
11. स्वाति मेलकानी : **पहाड़ एक भरोसा है** — अनिल कार्की 312
12. अनुपम सिंह : **कविता की निर्भीक और साहसी दृष्टि** — कविता कादंबरी 315
13. नेहा नरूका : **कविताएँ जिनके लिए शीर्षक अपर्याप्त है** — अमित कुमार सिंह 319
14. तिथि दानी : **निर्दोष प्रार्थनाओं की कविता** — भारती शुक्ल 322
15. स्मिता सिन्हा : **वैश्विक चेतना और स्त्री प्रश्न** — अरुणेश शुक्ल 325
16. लवली गोस्वामी : **दुःख की भाषा में प्रेम के क्षणों की अभिव्यक्ति** — प्रदीप्त प्रीत 328
17. कविता कादंबरी : **गुनाहगार और बेशर्म औरतों का हलफ़नामा** — रामाश्रय सिंह 331

18. प्रकृति करगेती : **जीवन के इन्द्रधनुषी रंगों की कविताएँ** कल्पना पन्त 334
19. शुभम श्री : **अवमूल्यन के दौर की मुखर अभिव्यक्ति** जितेन्द्र 339
20. वियोगिनी ठाकुर : **मैं तुम्हारी स्मृति में बची रहूँगी** श्वेता श्रीवास्त्री 342
21. पार्वती तिर्की : **जहाँ चलना नृत्य है और बोलना गीत** महेश सिंह 345
22. सुनीता अबाबील : **उपेक्षित समाज के प्रेम और दर्द की अभिव्यक्ति** प्रियंका सोनकर 349
23. प्रियंका वाघेला : **प्रेम, प्रकृति, परिवार और सुखद अंत की कविताएँ** संयोगिता वर्मा 353
24. नेहल शाह : **दर्द की कराह से पीड़ा का गीत** निरंजन श्रोत्रिय 355
25. संवेदना रावत : **देखती गुनती और बदलती स्त्री के सवाल** अजीत प्रियदर्शी 357
26. कल्पना पन्त : **पहाड़ से आती हुई कविता की आवाज़** विपिन कुमार शर्मा 361
27. जमुना बीनी : **आदिवासी संकट और संघर्ष की कविताएँ** राकेश कुमार 364
28. अनुराधा ओस : **स्त्री मन का उच्छ्वास** अम्बुज पाण्डेय 367

कविता में आवाजाही

1. ममता कालिया : **स्त्री की वाणी को ऊर्जा प्रदान करतीं कविताएँ** नियति कल्प 373
2. सुधा अरोड़ा : **कलम की प्रत्यंचा पर आधी दुनिया के कई सवाल** जनार्दन 377
3. चंद्रकला त्रिपाठी : **अंधेरे के पानी में सबका आकाश** श्रुति कुमुद 381
4. सुशीला टाकभौरे : **स्त्री और दलित शोषण की पहचान** रेखा सेठी 384
5. अंजना वर्मा : **सबको जीती हूँ मैं तुम्हारी तरह** विजयशंकर मिश्र 389
6. जया जादवानी : **अनुभूति और अनुभव का अन्वय** शुभा श्रीवास्तव 393
7. चित्रा देसाई : **मुक्तडोली कविताओं का ठौर** प्रीति राघव 396
8. अनिता भारती : **विभाजित स्त्री-विमर्श के विरुद्ध स्त्रीबोध का मुकम्मल दस्तावेज़** पूनम सिंह 400
9. पुष्पिता अवस्थी : **चित्त का अन्नप्राशन है प्रेम** अंकिता तिवारी 404
10. रोहिणी अग्रवाल : **असहमतियों, असंतोष और अतृप्ति से जन्मी आंदोलनधर्मी कविताएँ** सुधा उपाध्याय 408
11. हेमलता महिश्वर : **जीवन से जीवन की कविता** शचीन्द्र आर्य 411
12. रति सक्सेना : **संश्लिष्ट और असाधारण काव्य-दृष्टि** नीरज दइया 415
13. मीता दास : **संघर्ष की ज़मीन से उपजी कविताएँ** अंजन कुमार 420
14. अंजू शर्मा : **कविता की एक सार्थक आवाज़** कीर्ति बंसल 423
15. निधि अग्रवाल : **पितृसत्ता की कैद और उससे मुक्ति का संघर्ष** अनिल अनलहातु 427
16. ऋतु त्यागी : **समय के बीहड़ इलाकों में कविता की पहलकदमी** नीरज दइया 430
17. माया गोला : **प्रेम को सर्वोपरि मानने वाली कवयित्री** लक्ष्मण व्रजमुख 434
18. सुनीता : **कविता में जीवन-यथार्थ का स्पंदन** मीना बुद्धिराजा 437
19. संगीता गुंदेचा : **कवित्व का नया मानचित्र** शर्मिला जालान 440
20. रजत रानी 'मीनू' : **संघर्ष और स्त्री प्रतिरोध की चेतना** आकाँक्षा 444

विशेष

1.	समकालीन स्त्री कविता के पंचम स्वर	निरंजन श्रोत्रिय	449
2.	मोना गुलाटी : वस्तुगत यथार्थ और संवेदना का सहमेल	कुमार मंगलम	455
3.	पूंजीवादी दौर में दलित स्त्री स्वर	नीरज कुमार मिश्र	459
4.	हिंदी कविता में पूर्वोत्तर भारत का स्त्री स्वर	प्रदीप त्रिपाठी	466
5.	स्त्री कविता संसार को समृद्ध करती युवा पदचापें	पंकज शर्मा	469

वर्ष: 16, अंक: 2-3,
अक्टूबर-दिसम्बर 2023 से जनवरी-मार्च 2024

लमही
UGC Care Listed

संपादकीय

स्त्री-चेतना कोई इकहरी चेतना नहीं है बल्कि यह एक व्यापक मानुष बोध की चेतना है। इसी चेतना से स्त्री-कविता जन्म लेती है। यह अवरोधों और विभाजनों का अतिक्रमण करने वाली एक ऐसी अविरल चेतना है जिसमें अपने समय का ताप और दाब मौजूद रहता है। यह पुराने औजारों को अपर्याप्त साबित करती ऐसी कवि-चेतना है जो परंपरा के बंद पड़े किवाड़ों को साहस के साथ खोलती है। स्त्री की अनेक मनोभूमिकाओं को समाहित करते हुए लमही का यह अंक स्त्री कविता के योगदान को देखने-समझने का एक सामूहिक यत्न है।

परिदृश्य की बहुलता के बीच यह भी समझना आवश्यक हो जाता है कि इक्कीसवीं सदी में उभरे स्त्री कवियों का 'नया' रचना-विवेक किस तरह विकसित हुआ है? स्त्री कविता की प्राथमिकताएं क्या हैं? उसकी चिंताएं और सरोकार क्या हैं? हमारे समय में 'नए' का बहुत शोर है ; ऐसे में यह देखना ज़रूरी हो जाता है कि 'नएपन' की सार्थकता क्या है! यह नयापन अपनी पूर्व परंपरा में क्या-कुछ सार्थक जोड़ पाता है! 'स्त्री कविता' समाज और व्यवस्था के पुराने संस्करणों को संशोधित और परिवर्धित करने में किस हद तक सफल हुई है! नयी सदी के 'कवि-संकुल' में अपने समय को निजी दृष्टि से गढ़ने की तैयारी और बेचैनी कितनी है! लमही का यह अंक इन्हीं सवालों की उपज है।

कविता के वर्तमान परिदृश्य में 'स्त्री कविता' विवरणों की बहुलता के बजाए स्थितियों की विडंबना पर जोर देती है, स्थितियों के निर्माण के जिम्मेदार कारकों को सूक्ष्मता से विश्लेषित करती है। स्त्री कविता के भीतर अनंत प्रश्नाकुलताएं और सभ्यता का पुनरीक्षण है; शुचिता संबंधी मान्यताओं के नकार के साथ ईश्वरतंत्र का अस्वीकार है; हिंसा और जब्ती मनोवृत्ति का प्रतिरोध है; स्थापित संरचनाओं के अतिक्रमण का साहस है; यौनिकता के नियंत्रण का प्रश्नवाचक विरोध है; अधीनता की दुर्निवार अस्वीकृति के साथ वर्चस्वशाली संरचनाओं का तर्कसंगत ज़वाब है। स्त्री कवियों में कविता की भाषा को लेकर भी अधिक सचेतता और संवेदनशीलता दिखाई देती है। स्त्री कविता प्रचलित भाषा और उसकी भाषिक भंगिमाओं को महज विचारों और भावों के प्रगटीकरण का माध्यम नहीं मानती बल्कि उसे जीवंत प्रक्रिया के रूप में अपनाती है। देखा जाए तो रचना की सिद्धि 'प्रभाव के सम्प्रेषण' में निहित होती है और भाषा ही इस सम्प्रेषण को संभव करती है। स्त्री कविता के लिए 'भाषा' महज सम्प्रेषण का माध्यम नहीं आत्मीय प्रभाव उत्पन्न करने का 'स्त्री-संवेदी मूल्य' भी है। इसलिए स्त्री-कविता अन्याय, तिरस्कार और लैंगिक भेद को शब्दबद्ध करने के लिए नयी भाषा ईजाद करती है– एक ऐसी भाषा जिसमें द्वंद्व की सृष्टि और सघन भाव बिम्बों के सम्प्रेषण की शक्ति और ऊर्जा हो।

स्त्री कविता की अंतर्ध्वनियों में यह सवाल पैबस्त रहा है कि अब तक उसके साथ जो अमानवीयताएं बरती गयी हैं क्या उसका कोई स्मारक भारतीय समाज के मानचित्र पर दर्ज है! क्या स्त्री के साथ घटित निर्ममताओं के लिए पुरुष समाज के भीतर कोई ईमानदार स्वीकार्य है! गार्हस्थ के खटराग में अपना पूरा जीवन देने वाली स्त्री के श्रम का पुरुष समाज के लिए क्या मूल्य रहा है! मातृत्व के महिमामंडन के भीतर स्त्री की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर क्या किसी तरह की गंभीर बहस समाज में मौजूद है!

साहित्य में यह सवाल बार बार उठाया जाता रहा है कि कविता के मूल्यांकन की कसौटियाँ क्या होनी चाहिए! निश्चय ही विधा की अपनी कसौटियां होती हैं किन्तु क्या लेखक के 'व्यक्तित्व और जीवन' को रचना का मूल्यांकन करते समय